

अध्याय - 6

डा० वीरेन्द्र नारायण पांडेय

साहित्य सेवा खातिर अनेक पुरस्कार से सम्मानित वीरेन्द्र नारायण पांडेय के जनम जनवरी 1941 के छपरा में भइल। इतिहास आ रजनीतिशास्त्र से स्नातकोत्तर उपाधि-प्राप्त करे के साथ कानून के डिग्री भी लिहलन। शिक्षा-दीक्षा का समाप्ति का बाद गंगा सिंह महाविद्यालय, छपरा में राजनीतिविज्ञान अध्यापन कार्य प्रारंभ कइलीं। उहँवे से विभागाध्यक्ष का रूप में अवकाश ग्रहण गइनी। अध्यापन कार्य का अलावे साहित्य सृजन का सिलसिला में हिंदी आ भोजपुरी में लेखन शुरू कइलें। भोजपुरी कहानी-संग्रह 'दरबा' पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा इहाँ का सम्मानित भइल रहलीं। आपन स्वतंत्र लेखन का अलावे 'गाँधी गाथा', 'प्रेम-कथा' आदि संकलन के संपादन का साथ ही भोजपुरी 'जनपद', 'पहरूआ', 'चाक' आदि पत्रिकन के संपादन में भी इहाँ के सहयोग रहे।

विषय प्रवेश

'पुरान घड़ी' शीर्षक अवकाश प्राप्त बूढ़ आदमी के प्रतीक का रूप लेखक जुगुल बाबू के कहानी में उपस्थित भइले बाड़ें। कहानी में फलैश बैक का रूप में अपना पत्नी-सुभद्रा का इआद जहाँ जिनगी के सुखद समय के इआद दिआवे ला। उहँवे पेंशन से पोता-पोती पर प्यार लुटावे पर पुतोहू के आँख-भँव चमकावल आ ओह पर आपति प्रकट कइल भौतिकता का नीचे रिश्ता आ स्नेह में दबा के छटपटइला के प्रस्तुतीकरण बा। अंत में उनकर जिनगी बोझ बन गइल बा। मृत्यु का बाद अवोध रत्ना आ संजय के पूछल कि 'उहाँ का कब आइब' कहानी के क्लाइमेक्स ह।

पुरान घड़ी

जुगुल बाबू तइयार होके अपना कमरा में टहलत रहलन। घड़ीसाज के कहल बात रह-रह के उनका मन के काँट लेखा गइत रहे। ऊ एक बेर अपना बियाह में मिलल घड़ी के मरम्मत करवावे जब घड़ीसाज के लगे लेके गइलन, त ऊ कहले रहे-‘एगो बात कहन बानी’ अनमख मत मानेब। अपने एह घड़ी के मरम्मत करवावे पर अबहीं ले जेतना रूपियां खरच देनी , ओतना में त एगो नये घड़ी कीना गइल रहित । अब एकरा पर खरचल बेकार बा। अगल घर में छोट नाती-पोता होखे लोग, त ओह लोग के खेल खातिर अब ई घड़ी देदीं।

ऊ ओजवाँ से मुसकात चल आइल रहलन, बाकिर घड़ीसाज के कहल बात उनकर पाछ ना छोड़लस।

घड़ी के उजड़ल डायल आ पिअराइल केस पर नजर गइला से ऊ छटपटाये लागल रहलन आ सोचे लगलन-साँचो बहुत पुरान हो गइल बा ई घड़ी। ईहे जब नया रहे, त उनकर संगी-साथी लोग एकरा चमक आ बनावट के तारीफ करत आघात ना रहे लोग। दफतर में उनके घड़ी से समय मिलावल जात रहे। अब पुरान भइला पर ईहे घड़ी कबो आध घंटा सुस्त आ कबो घंटो भर तेज चलेले। महिना-दू महिना पर बंदो हो जाले आ हिला-डोला पर कबो-कबो चलहूँ लागेले। जब ना चलेले त घड़ीसाज के देखावे के पड़ेला। अब त साँचो एकर कलई उजड़ गइल बा, देखहूँ में बदरंग लागेला।

स्कूटर घुरघुराइल आ जुगुल बाबू के धियान बँटल। ऊ बुदबुदइलन- ‘दफतर जाये के बेरा हो गइल, दीपक दफतर जात बाड़न।’ ई बात दिमाग में आवते उनका आगा अपना मेहरारू के इयाद के पन्ना पड़फड़ा के खुल गइल-जब के ऊ दफतर जाये लागस, त उनकर मेहरारू सुभद्रा, उनका के दुआरी पर ले छोड़े आवस। उनका दफतर से लवट के अइला पर, बिना कुछ बतिअवले, स्टोब बार के हाली दे उनका खातिर जलपान आ चाय बना देस। उनका आगा जलपान रख के, दीप्ति आ दीपक के हुड़दंग के किस्सा हँस-हँस के सुनावस। बेटा-बेटी के बाल सुलभ हुड़दंग के रोचक

किस्सा उनका के गुदगुदावे आ खुल के हँसस। एह से उनकर दिन भर के थकान मेंटा जाये। दुनों भाई-बहिन मिलके कबो चीनी के डिब्बा खोल के, चीनी खाके पेहना भुलवा देव लोग, कबो दूध पर के मलाई उतार के चट जाये लोग आ दूध उघारे छोड़ देवे लोग, त बिलाई जुठिया देवे। रोज मूस लेखा पूजा खातिर रखल किसमिस आ मिसरी के भोग लगा देवे लोग। एतना उतपात कइलो पर सुभद्रा के कबो खीस ना बरे। उनका के खिसिआइल केहू कबो ना देखले होई।

अगर कबहूँ सुभद्रा उनकर मुँह उतरल देख लेस त उनका बेचैनी हो जाय आ ऊ उनका से ढेर कुल्ही सवाल करे लागस- 'काहे उदास बानी, केहू से दफतर में झगड़ा भइल ह का? राउर तबीयत ठीक बा नू? अगर उनका से गलतियो से ई कहा जाय कि उनकर तबियत कसरियाह बा, त सुभद्रा डाक्टर बोलावे से लेके देह मले तक के काम बेचैनी में रे लागस।

सुभद्रा के मरला चउदह बरिस से ऊपर हो गइल, बाकिर जुगल बाबू के अइसन लागेला जइसे ई कुल्ही बात कालहे के होखे। सुभद्रा के संगे बितावल एक-एक पल आजो उनका खातिर टटका बा।

रेक्सा के घंटी टुनटुनाइल आ जुगल बाबू के इयाद के कड़ी टूट गइल।

ऊ कमरा से बाहर निकल अइलन। बाहर के ओसार में ठाढ़ होके संजय आ रत्ना के रेक्सा के भाव भरल नजर से निहारे लगलन। दीपक के बेटा-बेटी जात-जात हल्ला करत गइलन स- 'दादाजी, माई खाये खातिर बोलवली ह।'

ई सुन के जुगल बाबू के ओठ पर भाव भरल मुसकी उभर आइल आ उनका दिमाग में दीपक आ दीप्ति के लड़िकाई के अलबम एक बारगी खुल गइल। ओही अलबम में अझुराइल ऊ अँगना के ओर बढ़ गइलन।

राज सात बजते-बजते जुगल बाबू तइयार होके बइठ जास। उनका के बइठल देख के संजय आ रत्ना परसादी खातिर पहुँच जाये लोग। ऊ ओह लोग के परसादी बाँट के, पढ़ावे खातिर बइठा लेस। लड़िकन में अझुराइल रहला से ऊ अपना भीतर के खालीपन के भुलाइल रहस। नव बजते-बजते लड़िका स्कूल के तइयारी करे चल जा स आ ओकनी के जाते जुगल बाबू खूँटी पर टाँगल कुरता पेन्ह लेस, गोड़ में जूता डाल लेस आ ओसारा में घुमे लागस। एह बेरा पर उनका एगो अजबे बेचैनी हो जाये।

तीस बरिस ठीक बेरा पर तइयार होके, दफतर जाये के सिलसिला चलत रहल बा, एही से रिटायर्ड हो गइला पर दफतर के बेरा पर तइयार भइल उनकर मजबूरी हो गइल बा। जवना दिन खाये-पीये में अबेर हो जाला, ओह दिन ऊ भीतरे-भीतरे झल्लाइल रहेलन आ तनाव के लकीर उनका चेहरा पर लगल रहेला।

दफतर जाके एने-ओने चक्कर लगावेलन आ फेरू अपना संगे काम कइल लोग के बइठ जालन। दफतर के कामकाज के जायजा लेत, कर्मचारी के बढ़त गैर-जिम्मेदारी, बिगड़त व्यवस्था आ राजनीतिक भ्रष्टाचार पर आपन विचार रखेलन। उनका बात में रूचि लेत संगी-साथी लोग कवनो-कवनो अइसन दिक्कत दूर करे के राहो पूछ लेला लोग, जवन काम कर के बेरा ओह लोग के आगा आवेला। ऊ अपना अनुभव आ ज्ञान से बड़ा सटीक राय देवेलन, एही से सभे उनका अइला पर खुश रहेला। दफतर से घूम-घाम के जब ऊ घरे लवटेलन, त उनका ई बुझइबे ना करेला कि ऊ रिटायर्ड हो गइल बाड़न।

एक दिन जुगुल बाबू दफतर से लवटेलन, त उनकर अंग-अंग दरद से टूटत रहे। ऊ चढ़र तान के चुपचाप पड़ रहलन। बिछवना पर जाते उनकर आँख झँपाये लागल आ देह बोखारे जरे लागल। ऊ बेसुध हो गइलन।

दीपक दफतर से लवट के अइलन। जब उनका आगा, उनकर मेहरारू माधुरी, जलपान रखली, त पूछलन-“बाबूजी जलपान क लेनी?”

“अबहीं उहाँ के जलपान ना कइनी ह। स्कूल से लवट के संजय आ रत्ना खेले लागल ह लोग एही से उहाँ के लगे ना गइल ह।” -ई कह के माधुरी प्याली में चाय ढारे लगली।

अपना लगे ठाढ़ संजय के पुचकारत, दीपक कहलन-“जा बेटा, दादाजी के नास्ता करे खातिर बोला ले आवा।”

संजय एक छलांग में दादाजी के कमरा में पहुँच गइल आ कहलन-“दादाजी, चलीं, जलपान करे, पापा बोलावत बाड़न।”

जुगुल बाबू कहँत कहलन-“बेटा, पापा से कह द कि हम जलपान ना करेब, हमार तबीयत ठीक नइखे।”

संजय उहाँ से उछलत पापा के लगे पहुँच के कहलन-“दादाजी चढ़र ओढ़ के सुतल बानी, आ कहनीं ह कि हमार तबीयत ठीक नइखे, जलपान ना करेब।”

दीपक ई सुनके उहँवा से उठ गइलन। जुगुल बाबू के लगे पहुँचके पूछलन-“कइसन तबीयत बा, बाबूजी?”

जुगुल बाबू आँख मूँदले कहलन-“कुछ ना बेटा, तनी बोखार हो गइल बा। मौसमी बोखार ह। आराम क लेब, त ठीक हो जाई।”

दीपक उनका लीलार पर हाथ रखलन आ घबड़ा के कहलन-“राउर देह त बोखारे जरत बा आ रउरा कहत बानी कि आराम कइला से ठीक हो जाई। माधुरी के बोला लेतीं, ऊ कवनो डाक्टर के देखा देती।”

ई कहत दीपक तेज डेग धरत कमरा से बाहर निकल गइलन।

अपना मेहरारू के लगे ठाढ़ होत कहलन-“बाबूजी के देह बोखार से आग लेखा लहकता। कवनो डाक्टर के बोलवा के देखा देल जरूरी बा।”

उनकर मेहरारू पल भर चुप रहली आ कहली-“देखीं। हम कहीले, त रउरा खराब लागेला कि अब बाबूजी के ऊ उमिर नइखे कि बेमतलब के रोजे दफतर ठीक बेरा पर चल जाइले। बेमतलब के चक्कर कटला से हरानी त होखबे करेला, संगे-संगे दू-चार रूपिया रोजे खर्च हो जाला। दू-चार रूपिया में एक साँझ के तरकारी हो जाइत। एतना कम पइसा में महिना भर के खरची एह महँगी में कइसे चलाइले -ई हमहीं जानीले। रउरा त बंधल- बंधवल महीना देके निश्चित हो जाइले।” एक साँस में ई कुल्ही बात माधुरी कह गइली।

दीपक झल्ला के कहलन-“बुझाता आज के बाद ई कुल्ही बात बतिआवे के मौका फेरू कबो ना मिली। पहिले त उनका के देखावे के बात करेके चाहीं।”

ई कहके ऊ बाहर निकल गइलन।

दीपक तनी देर के बाद डॉ. नाथ के संगे लेके अइलन। डॉक्टर जुगुल बाबू के जाँच कइलन आ कहलन-“कवनो खास बात नइखे। बोखार त मौसमिये बुझात बा आ घामो लागल बा। दवाई लिख देत बानीं, ठीक हो जायेब; बाकिर थोड़ा आराम कइल जरूरी बा।” ई कहके डॉक्टर चल गइलन।

देर रात गइला ले दीपक आ माधुरी में जुगुल बाबू के दफतर गइला पर बहस होत रहल। दीपक लाख समझावे के चाहस कि उहाँ के दफतर गइला से मन बहल जाला आ निरोग रहे खातिर घूमल जरूरियो बा।

“अगर उनकर घूमल आ दफतर गइल बंद कर दिहल जाई त ऊ खटिया ध लिहना।” उनकर कवनो दलील माधुरी माने के तइयार ना रहली। ऊ इहे कहत रहली कि एह उमिर में आराम ना कइला से रोग होता। उनका दफतर ना गइला से बेकार खरच के बचतो होई।

आखिरी में दीपक बात टालत कह देलन-“ठीक बा, उहाँ के ठीक हो जाये द, हम दफतर ना जाये के कह देबा।”

दू हफता ले बेमार रहला के बाद जुगल बाबू पूरा निरोग हो गइलन। उनका पहिलहीं लेखा बुझाये लागल। बिछवना पर पड़ल-पड़ल उनका उजबुजाहट होखे लागल, बाकिर पतोह के बात रह-रह के उनका दिमाग में चक्कर काटत रहे। पतोह के ई कहल ऊ सुन लेले रहलन कि उनका गइला से बेकार खरचा होला। अइसे पड़ल रहला से उनका देह में जंग लाग जाई आ बेरोग के रोगी हो जइहन।

एक दिन जुगल बाबू के उजबुजाहट सीमा पर कर गइल। ऊ दस बजते-बजते कपड़ा पेन्ह के कमरा से बाहर निकल अइलन। एही बीचे दीपक दफतर जाये खातिर बाहर निकललन। अपना बाबूजी के तइयार होके बरामदा में ठाढ़ देख के पूछलन-“रउरा कहीं जाये के तइयारी कइले बानी का ?”

जुगल बाबू घुटकत जवाब देलन- “बइठल-बइठल मन अगुता गइल बा आ देह के जोर-जोर में दरद हो गइल बा। सोचत बानी कि कतहीं से तनि देर घूम-घाम आई। घूम अइला से मनो बहल जाई आ देहो सीधा हो जाई।” उनकर बात सुनके दीपक के चेहरा के तनाव बढ़ गइल आ उखड़ल आवाज में कहलन-“अबहीं रउरा पूरा ठीको ना भइनी आ दफतर के चक्कर काटे खातिर तइयार हो गइनी। रउरा अब आराम से पड़ल रहे के चाहीं। कहीं फेरू बेमारी बढ़ गइल, त नाहक सभे तंग हो जाई।”

दीपक के बात सुनके जुगल बाबू के चेहरा एक-ब-एक पिअरा गइल आ उनका आँखन में एक संगे अनगिनत भाव पँवरे लागल। ऊ दीपक के ओर अझुराइल नजर से देखत रहलन-“ठीके कहत बाड़ बेटा, अब हमरा चुपचाप पड़ल रहे के चाहीं।” ई कहत ऊ अपना कमरा के ओर बढ़ गइलन। ऊ कमरा में घुसते कुरता उतार के खूँटी पर टाँग देलन आ कलाई में बान्हल घड़ी खोल के टेबुल पर रखलन। घड़ी रखे के बेरा एकबारगी घड़ीसाज के कहल बात उनका दिमाग में बवंडर लेखा उठल आ ऊ तिलमिला उठलन। उनका मुँह से निकलल-“घड़ीसाज ठीके कहले रहे, अब

साँचो ई घड़ी बेकार हो गइल बा। एकरा के अब लड़िकन के खेलहीं के दे देवे के चाहीं।' उनका बुझाइल जइसे उनका नस-नस में चिउँटी रेंगत होखे। ऊ बेचैनी में खिड़की के लगे अइलन आ खिड़की के पल्ला खोलके, सड़क पर आवत-जात, चिन्हार-अनचिन्हार लोग के भाव नजर से निहारे लगलन।

जुगुल बाबू के देह ढेर तेजी से गिरे लागल आ उनका ई बुझाये लागल कि अब उनका अंग-अंग में जंग लाग रहल बा। उनकर साँझो के टहलल बंद हो गइल। जब ऊ बिछवना ध लिहन आ किरिया-करम करे से लाचार हो जइहन, त उनकर जिनगी नरक हो जाई। उनका के एह बात के फिकिर भीतरे-भीतरे घुन खईले जात रहे। रोज पूजा करे के बेरा भगवान से बिनती करस कि भगवान उनका के चलते-फिरते एह दुनिया से उठा लेस।

जवना दिन जुगुल बाबू के पेंसन लेवे जाये के होखे, ओह दिन उनका चेहरा पर एगो चमक रहत रहे। भोरहीं उठके ऊ पेंसन लेवे जाये के तइयारी करे लागस। ओह दिन उनकरा ई लगवे ना करे कि उनका देह में फुरती के कमी बा। उनकर पतोहो ठीक बेरा पर उनका के खिला-पिआ के, रेक्सा बोलवा देस।

पेंसन के रूपिया उठा के जुगुल बाबू निफिकिर होके घूमत रहस आ चिन्हार लोग से भेंटे करस। ओह दिन उनकर अपना तन आ मन-दूनो-के दुख बिसरल रहत रहे।

एक महीना में जुगुल बाबू पेंसन लेके ढेर अबेर से घरे लवटलन। उनका पहुँचते संजय आ रत्ना आके कहल लोग-“दादाजी, बाबूजी जलपान खातिर बोलवनी ह।”

जुगुल बाबू लड़िकने के संगे मुसकात जलपान करे चल गइलन। उनका बइठते दीपक पूछलन-“आज लवटे में ढेर अबेर काहे हो गइल, बाबूजी। हमनी के मन में त तरह-तरह के बात आवे लागल रहे।”

“आसहीं, बाजार में तनि घमे-घामें लगनी हैं।” -कह के जुगुल बाबू आगे रखल जलपान करे लगलन।

जलपान कइला के बाद जुगुल बाबू अपना पाकिट से रूपिया निकललन आ माधुरी के ओर बढ़ावत कहलन-“ल बहू, रूपिया रख ल। अबकी कुछ कम रूपिया बा, हम कुछ खरच क देनी ह। अपना खातिर ब्लेड, साबुल आ तेल ले लेनी हैं।”

एतना कह के ऊ पल भर चुप हो गइलन आ फेरू कहलन- “दोकान पर गइनी हँ, त एगो फोम के स्कूल बैग पसंद पड़ गइल ह। रत्ना आ संजय खातिर दू गो बैग कीन लेनी हँ। सस्ता में एगो ब्रीफ-केस मिल गइल ह, ऊ दीपक खातिर लेले अइनी हँ।”

ई कह के जुगल बाबू दीपक आ माधुरी पर उड़त नजर डललन।

माधुरी के तनह चेहरा आ आँखिन में उभरल भाव देख के जुगल बाबू सफाई देवहीं के चाहत रहलन कि ऊ बोल उठली- “अबहीं दूनो लड़िकन के स्कूल-बैग नये बा, कीनला के कवन जरूरत रहल ह। ब्रीफ-केस कीनल बेकारे रहल ह।”

जुगल बाबू उनका बात के कवनो जवाब ना देलन। ऊ लड़िकन से कहलन- “चल लोग, तोहरा लोग के उपहार दीं।” ई कहत ऊ ओजवाँ से उठ गइलन आ लड़िको उनका पाछा लाग गइलन स। उनका जाते दीपक मुसकात कहलन- “देखलू, बाबूजी लड़िकन के केतना मानीले।”

माधुरी के खीस चेहरा पर से जीभ पर उतर आइल, ऊ कहली- “बाबूजी सठिया गइल बानी। बेकार के चीज कीन के पइसा बरबाद कर अइनी। पइसा कम हो गइला से पूरा महिना के बजटे बिगड़ जाई, ई उहाँ के बुझावे ना करेला। अइसे, ई उँहें के पेंसन के रूपिया ह, जइसे मन करे खरच करीं, उड़ाई-पड़ाई, हमरा बोले के कवन हक बा। बाकिर घर-खरची में जब उहो रूपिया जोड़ाइल बा, त एह बात के बुझे से चाहीं। रउरा ई मालूम बा कि पिछलको महीना में टेलीविजन आ गोदरेज आलमारी के किस्त नइखे दिआइल।”

दीपक चुपचाप उनकर कुल्ही बात सुनत रहलन, बाकिर उनका चेहरा पर खीस के लकीर उगल आवत रहे। ऊ अपना के सम्हारत कहलन- “एतना जोर-जोर से ई कुल्ही बात बोल गइलू ह, तोहरा ई तनिको ना बुझाइल ह कि तोहार बात बाबूजी के कान में पड़ल होई, त उहों के केतना चोट पहुँचल होई। हर बात सोच-समझ के बोले के चाहीं।”

अबहीं ऊ आउर कुछ कहहीं के चाहत रहलन कि रत्ना आ संजय स्कूल-बैग आ चॉकलेट के डिब्बा लेले उनका लगे पहुँच गइल लोग। संजय चॉकलेट के डिब्बा उनका हाथ में धरावत कहलस- “बाबूजी दादाजी कहनी हँ कि बाबूजी से चॉकलेट बँटवइह लोग।”

दीपक डिब्बा खोल के रत्ना आ संजय के हाथ में चॉकलेट पकड़ा दलन। दूनो लड़िका खुशी के कूदे लगलन स। स्कूल-बैग देखावत संजय पूछलस- “बाबूजी, दादाजी के एतना रूपिया कहाँ से आवेला कि हमनी खातिर ई सब कीन ले आइले?”

दीपक मुसकाये के कोसिस करत रहलन-“बेटा, नोकरी करेवाला जब नोकरी से रिटायर्ड, हो जाला त ओकरा सरकार के ओर से रूपिया मिलेला-नाती-पोता के चॉकलेट आ स्कूल-बैग कीने खातिर।” ई कहके ऊ ठठा के हँसे लगलन आ लड़िका ओजवाँ से उछिलत-कूदत चल गइलन स।

ओह दिन के बाद जुगुल बाबू के आपन जिनगी बोझा लेखा लागे लागल। उनका चेहरा पर उदासी के परत-पर-परत पड़े लागल आ उनका आँखिन में अलगाव के भाव पँवरे लागल। देखते-देखते उनकर देह गिरे लागल आ ऊ खटिया ध लेलन।

एक दिन जुगुल बाबू एह दुनिया से आँख मुँद लेलन। उनकर रंथी सजावल जात रहे आ उनका लगे बइठ के नाता-रिश्ता के लोग रोअत-बिलखत रहे। अड़ोस-पड़ोस के लोग समझावत-बुझावत रहे।

दीपक करेजा पर पत्थर धड़ले, बाप के आखिर यात्रा के तइयारी करत रहलन।

रंथी उठल, त माधुरी के रोअल-चिल्लाइल बढ़ गइल। उनका के रोअत देख के रत्ना आ संजयो रोये लगलन स। ओकनी के अपना अँकवारी में पकड़ के माधुरी चुप करावे लगली। संजय सुसुकत बोलल-“माई, दादाजी के कहाँ ले जाता लोग? उहाँ के फेरू लवट के कब आएब?”

माधुरी रोअत कहली-“अब उहाँ के कबो ना आएब, बेटा..... कबो ना।”

संजय फेरू रोवे लागल आ रोअते पूछलस-“दादाजी ना आयेब, त हमनी के चॉकलेट के दी? पेंसन केकरा मिली? बाबूजी के पेंसन मिली का?”

ई बात सुनते माधुरी के आँखिन से टपकत लोर थमह गइल आ उनका देह में कंपकंपी समा गइल। उनका बुझाइल कि पथराइल आँख उनका ओर बढ़ल आवत बा। ऊ डेरा के आपन आँख बंद क लेली आ रत्ना आ संजय के करेजा में साट के सुसुके लगली।

अभ्यास

1. 'पुरान घड़ी' केकर लिखल कहानी बा?
2. जुगुल बाबू अपना शरीर के तुलना कवन चीज से करेलन?
3. माधुरी के जुगुल बाबू के ऑफिस गइल काहे खराब लागे ला?
4. दीपक के दफतर जात देख के जुगुल बाबू के मन में केकरा इआद के पन्ना फरफराए लागल?
5. "बाबूजी सठिया गइल बानी" इ कवना विचार से आ केकर कहल बा?
6. "दादाजी, माई खाये खातिर बोलवली ह" दीपक के बेटा-बेटी के इ बात सुन के जुगुल बाबू के दिमाग में का खुल गइल?
7. जुगुल बाबू के कवना कारण से आपन जिनगी बोझ लेखा लागे लागल आ, आ उनका शरीर पर ओकर का प्रभाव पड़ल?
8. नीचे लिखल मुहावरा के आ ओकर अर्थ दिहलबा मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करीं।

- (i) काँट लेखा गइल - खराब लागल
- (ii) जिनगी बोझा भइल - जिनगी से ऊबल
- (iii) आखिरी यात्रा - मउअत के बाद शमसान के यात्रा
- (iv) आँख झपाना - अऊँघावल, नींद आवल
- (v) चोट पहुँचल - दुख भइल

शब्द-संपदा

अनमख	- खराब, बुरा
खरचल	- खरच कइल
बुदबुदाइल	- धीरे-धीरे हलुक आवाज में बोलल
तबीयत कसरियाह	- तबीयत खराब
टटका	- ताजा
झल्लाइल	- खीस में मन के एगो आव
रंथी	- अर्थी